# गुरमत संगीत में कीर्तन केन्द्र और टकसालें

**करनजीत सिंह***

गुरमत संगीत की उत्पत्ति श्री गुरु नानक देव जी द्वारा हुई। गुरबाणी का तालबद्ध, रागबद्ध होना एक नया अनुभव था। सभी सिख गुरुओं द्वारा गुरबाणी संगीत के प्रचार प्रसार के लिए सफल प्रयास किये गए। सिख गुरुओं द्वारा विकसित इस गुरमत संगीत की संस्थागत प्रणाली को भारतीय संगीत जगत में स्थापित किया गया। इसे विकसित करने के साथ ही इसे पूर्ण रूप से प्रचार में लाने के लिए कीर्तन केन्द्रों की स्थापना भी गुरुओं द्वारा की गई। इन केन्द्रों के कारण ही यह विशाल परंपरा सिख जगत का अटूट अंग बनकर विकास करती रही। इतिहास गवाह है कि कुछ समय सिखों गुरुओं द्वारा रचित इस कीर्तन परंपरा का गायन सिर्फ रबाबियों द्वारा ही किया जाता था परन्तु गुरु अमरदास जी ने हर सिख को इस वाणी के साथ जुड़ने का संदेश दिया:

आवो सिख सतगुरु के प्यारेओ

गावो सच्ची बाणी (गु.ग्रं.स. 920)

इस पद की गवाही भरता हुआ एक और पद मिलता है, जो भाई गुरदास जी द्वारा रचित है।

घर घर अंदर धर्मसाल

होवे कीर्तन सदा विसोआ (वार, पौडी 27)

गुरमत संगीत को विकसित करने के लिए और घर घर तक पहुँचाने की बात कही गई है। इस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए विभिन्न संस्थायें और संगीतजीवी वर्ग कार्यरत रहे हैं। विभिन्न कीर्तन केन्द्र और टकसाल भी सीना-ब-सीना शिक्षा का प्रचार और प्रसार कर रहीं है। इस विधा को प्रसारित करने में ''भाई मर्दाना से वर्तमान काल के समूह रागी, रबाबियों कीर्तन कर रहे टकसाली उस्तादों, गुरमीत संगीत के कवियों रचनाकारों के अतिरिक्त महंत गज्जा सिंह, भाई चरण सिंह, भाई वीर सिंह, भाई प्रेम सिंह, भाई कान सिंह नाभा का योगदान भूला नहीं जा सकता।''[1]

गुरु नानक देव जी द्वारा उदासियों के दौरान करतारपुर को पहले शिक्षण केन्द्र के रूप में स्थापित किया

1 कौर, जसबीर, गुरमत संगीत दे विकास विच विभिन्न टकसाल, संस्थावा दा योगदान, गुरु नानक संगीत पद्धति ग्रंथ भाग-2, पृ. 200

*शोधार्थी, पीएच.डी,.संगीत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–110007, मो. 7508418080, ई–मेल karanrubal@yahoo.com